25.	हिंदी दलित उपन्यासों में इतिहास एवं समाज बोध	मधुपुरे गंगाधर बोधिराम	100
26.	चित्रा मुद्गल की कहानियों में स्त्री संवेदना की अभिव्यक्ति	मुदनर दत्ता सर्जेराव	102
27.	प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यासकारों का कई साहित्य में योगदान	प्रा.डॉ. डॉ. रहिमा शहनाज डॉ. अब्दुल्ला	104
28.	हिन्दी उपन्यासों में दलितों की सामाजिक चेतना	डॉ० रमाकान्त	108
29.	मन्नु भंडारी कृत 'एक कहानी यह भी' में स्त्री–विमर्श	राजपूत पी. डी	111
30.	निजीकरण के दौर में राजभाषा हिंदी का सवाल	डॉ. रजनी मुदनदन गायकवाड	114
31.	राजनीतिक संदर्भ : रामदरश मिश्र की कहानियाँ	लगन वर्मा	116
32.	भारतीय संस्कृति के प्रहरी : सिंधक	डॉ० सरिता चौहान	121
33.	विष्णु प्रभाकर की कहानियों में समसामयिक परिवेश	डॉ.शेख मुताताक अली डॉ. गुलाम रसूल	124
34.	गुलशीदान के राजनीतिक बुन्ध	रितुध्वज सिंह	126
35.	रामकथा और इक्कीसवीं सदी के प्रबन्ध काव्य (सत्यवती, अहल्या, पुरुषोत्तम एवं त्रेता, के विशेष सन्दर्भ में)	प्रा० दिनेशकुमार शिवकरण गायकवाड़ पेदाय	128
36.	डॉ शंकर शेष के नाटकों के मध्यवर्गीय पात्र – नाटक 'घरौंदा' और 'रक्तबीज' के उपलक्ष्य में–	प्रा संजय व्यवहारराव जोशी	135
37.	रामवृक्ष बेनीपुरी : आर्थिक विचार	प्रा.डॉ.शमुळपाल्कर किरण भालाजी	139
३८.	कुंवर बेचैनी जीवनचर्या प्रवाह	डॉ. सविता खोडके	143
३९.	श्याम गंगाहर पांडे कादंबरी–प्रेरणा और लक्ष्य	प्रा. महेश मोगनाळे	145
४०.	समकालीन राजनीतिक स्थिति-गतिविधि-हिंदी साहित्यकारों की संवेदना	पो.ज्योति भीमिबागुल रेड्डी	150
४१.	महिला लेखकों के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श के नये सन्दर्भ	डॉ.पुष्पा गोविंदराव कावलकाट	154
४२.	मैथिली साहित्य में सत्य विद्या का आगमन	मिथिला विभावरी तलवाड़ा	148
४३.	मराठी संतों की हिंदी वाणी	प्रा.श्रीमती पल्ली अर्चना बंडगजीराव	161

डॉसुनील जाधव,नांदेड

10 जनवरी, १९७५ में हिंदी का पहला विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर में हुआ था । पहला वैश्विक हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी को सम्पन्न होने के कारण इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता.... । आगे चलकर मनमोहन सिंह जी ने 10 जनवरी, 2006, को विश्व हिंदी दिवस मनाने की घोषणा की थी । और पहला विश्व हिंदी दिवस इसी दिन सम्पन्न हुआ था । इस सन्दर्भ में आधिक जानकारी हेतु विकिपीडिया के इस परिच्छेद को देखा जा सकता है.

विश्व हिंदी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है । इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना और हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है । विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं । सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं विश्व में हिंदी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी, १९७५ को नागपुर में आयोजित हुआ था । इसीलिए इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी, २००६, को हर वर्ष विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की थी । उसके बाद से भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी २००६, को पहली बार विश्व हिंदी दिवस मनाया था ।

पहला विश्व हिंदी दिवस सुरेशचन्द्र शुक्ल जी की अध्यक्षता में नार्वे में सम्पन्न हुआ था । तब से लेकर आजतक विदेशों में विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । दूसरा यह कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार तथा वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए मोरिशियस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम जी ने भारत के बाहर मोरिशियस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना करने का प्रस्ताव रखा था । जिसने 30 फरवरी, 2006 को औपचारिक रूप में कार्य करना आरम्भ कर दिया था ।

वसुधैव कुटुम्बकम यह मात्र कथन या सूक्ति नहीं है । यह एक संस्कृति–संस्कार है । और हिंदी भाषा उसकी प्रबल वाहिनी है । हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना ने सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोने का काम किया था । इसमें भाषा का सबसे बड़ा योगदान होता है । हिंदी भाषा के तीव्र गति से वैश्विक रूप धारण करने के कारण उसने हमारी संस्कृति, आचार-विचार, साहित्य-फिल्म, रहन-सहन, वेशभूषा, सामाज, धर्म, संस्कार, राजनीति, इतिहास, भूगोल को वैश्विक परिपटल पर विशाल रूप में अंकित किया । यही कारण है कि आज यह वैश्विक भाषा बन रही है । अर्थात वसुधैव कुटुम्बकम की भाषा है वैश्विक हिंदी ।

गुरु महाविद्यालय,
संभू वि परभणी

43.मराठी संतों की हिंदी बानी

इक्कीसवीं सदी का मनुष्य मनुष्य की ओर केवल वस्तु और उपयोगिताकी दृष्टि से देख रहा है। मनुष्य के लिए जहाँ केवल धन ही महत्वपूर्ण और अंतिम सत्य लग रहा है। आज धन के कारण वह गुमराह हो रहा है। वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण उसपर हावी होने कारण उसके मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। ऐसे समय हमें आवश्यकता है कुछ अच्छे विचारोंकी, सत्संग की । संतों की बानी हमारे जीवन में निराशा के बजाय उत्साह और आनंद भर देती है। संतों का साहित्य हमारे जीवन में सदैव प्रेरणादायी है।

संत साहित्य मनुष्य के जीवन–दर्शन का मुख्य आधार है। संतों की शाश्वत वाणी आज न्यायपुण्य में ही नहीं, भारतीय संस्कृति के लिए हर युग में रहेगा। आधुनिक युग के महान विचारकोंने भी संतों को महान की समझा है। इस आलेख में हम चर्चा करेंगे मराठी भाषी संत जिनकी बानी ने हिंदी साहित्य को भी समृद्ध बनाया। यद्यपि हिंदी साहित्य में संतों ने कम मात्रा में लिखा हो किंतु जो भी लिखा है वह अत्यंत मौलिक है। क्योंकि मातृभाषा को छोड़कर भाषा में साहित्य सृजन करना बड़ा कठिन कार्य होता है। महाराष्ट्र की मातृभाषा मराठी है। इस क्षेत्र के मराठी भाषीयोंने हिंदी साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस आलेख में हम संत नामदेव, भानुदास महाराज, संत एकनाथ, संत रामदास, निवृत्ति नाथ, केशव स्वामी, संत मुक्ताबाई, जनाबाई आदि संतों के योगदान की हिंदी साहित्य संवर्धन हेतु नामदेव जिनका जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ। नामदेव बाल्य अवस्था से ही विठ्ठल विचार बढ़ती रही और इसी के कारण सांसारिकता से उनका मन हटता जा रहा था। नामदेवजी ने अपनी भक्ति के द्वारा सभी जाति–धर्म के मनुष्यों के लिए भक्तिके विचार दिये हैं उनके बड़ी निडरता के साथ भक्ति किया जो आज भी प्रेरणादायी है। मराठी और हिंदी भाषा के माध्यम से उन्होंने महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत में जनजागृति की। नामदेव जी का हिंदी काव्य बड़ा सरल, सुंदर और भावपूर्ण है।

नामदेवजी के हिंदी पदावली में सगुण और निर्गुण भक्ति मिलती है। इनकी पदावली का प्रभाव विशेष रूप से पंजाब की जनता पर दिखाई देता है। अपने विचारों की क्रांतिकारी विचारों उत्तरी भारत में प्रज्वलित की । नामदेव अपने समय के निर्गुण भक्ति के प्रबल संत, वारकरी संप्रदाय के प्रमुख प्रचारक और हिंदी गीत शैली के प्रमुख कवियों में माने जा सकते हैं। नामदेवजी की उपलब्ध हिंदी रचनाएँ तीन सौ के करीब पाई जाती है। जिनमें कुछ साखियाँ है। इस पदी में से इकसठ पद सिखों की पवित्र – धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में समाविष्ट है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' के इस पदों के अनेक दृष्टांत प्राप्त होते हैं मातृभाषा मराठी होने के कारण इनके पदों में मराठी शब्द आते हैं। इनके साहित्य में खड़ी बोली के साथ – साथ ब्रज, पंजाबी, अरबी – फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उन्होंने जो हिंदी पद लिखे उसमें गुरु का महात्म, ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम, कर्म – मार्ग पर अग्रसरता, अतीश्वर का प्रेरक अविचारता, सत्संग का महत्व, सामरसता की महत्ता इस सारी बातों पर बल देकर समाज जागृति का कार्य किया है।

हिंदी भाषी की संत परंपरा के आदिपुरुष उनकी ही वाणी में प्राप्त होते हैं। साहित्य ही नहीं संगीत के धरातल पर भी देखें तो हिंदी खड़ी बोली पद को विभिन्न राग–रागिनियों की पद शैली सर्वप्रथम इन्होंने ही एकत्र की है। नामदेव हिंदी संत – परंपरा के पथप्रदर्शक संत ही नहीं वरन् वे इस परंपरा के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार भी हैं।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत और भक्त कवि एकनाथ जिनका जन्म हिंदी पदों में पाया जाता है। एकनाथ भारुड रचना के लिए प्रसिद्ध है। अपने भारुडों में संत पद हिंदी में मिलते हैं, जो बहुत ही मनोरंजक है। एकनाथ ने हिंदी में जो साहित्य लिखा इसमें सगुण को काफी ध्यान मिला है। संत एकनाथ की हिंदी रचनाओं में हम कई प्रवृत्तियाँ का समन्वय पाते हैं। जिसमें सृष्टि का विकासक्रम, सृष्टिकी की चिंतन प्रणाली, नवधाभक्तिकी भावना प्रमुख,

संत रामदास भी जिनकी जन्मभूमि महाराष्ट्र । जिनका मूल नाम नारायण है वह जन्मजात प्रतिभा के धनी थे। कहा जाता है कि 11 वर्ष की आयु में नारायण ने नारायण राम के दर्शन हुए और तब से नारायण राम के दास बन गये । समर्थ रामदास की बहुत कृतियों में दासबोध, मनाचे श्लोक, करुणाष्टक और विविध मराठी के फोटे – अंग तथा अन्य ग्रन्थ प्राप्त होते है। पूरियों के श्री समर्थ मारुतिदास मंदिर की जीर्ण जन्मभूमि तथा प्राचीन स्मृतियों से रामदास के हिंदी पद प्राप्त हुये। उनके हिंदी पदावली का मूल्य निम्न अंकित है। उन्होंने राम और रामनाम को संसार का सार माना है और सुनी माना का त्याग करने का संदेश इस पद द्वारा दिया है–

छोड़ न अबे मात ।

रामबीन कोइ न आवे साथ ।।

यो ही बैठा यो ही गेल।

झुटी है सब बात ।।1।।

ये कुछ है सो झुठा है रे।

दो दिन का रंगरास ।।2।।

पोता हाथे मुख ही जन चतुर

छोरी धन एक गात ।।3।।

समर्थ रामदास ने हिंदी पदों में सत्संग, सद्गुरु का महत्व, ईश्वर प्राप्ति का मार्ग, निर्गुण भक्ति की सत्ता, जनजागृति, हिंदू – मुस्लिम धर्म में एकता, ब्रह्मज्ञान, दिखावेपन का निर्मूलन, पवित्रता, इन सारे विषयों को स्थान दिया है। किंतु एक बात है जिसका ध्यान रखा जा सकता है कि समर्थ रामदास का मुख्य उद्देश्य 'लोकरंजन' न होकर 'लोकोद्धार' था। समर्थ रामदास के समय में मुसलमानों का प्रभाव बढ़ने के कारण उनकी पदावली में उर्दू के शब्द आते है। समर्थ रामदास जैसे आदर्श भाव–भावी सन्यासीपुरुष संतों ने समाज–जागरण के लिए हिंदी भाषा के माध्यम से जिस भव्य सौंदर्य का निर्माण किया वह हिंदी भाषा के लिए गौरव की बात है।

भानुदास महाराज अपनी विट्ठल भक्ति के लिए अधिक प्रसिद्ध थे। विट्ठल को ही कृष्ण के अवतार समझते थे। और यही कृष्ण भक्ति भानुदास के प्राप्त हिंदी पदों में मिलती है। भानुदासजी के दो हिंदी पद प्राप्त हुये है जो श्रीकृष्ण भक्तिपर लिखे है। नाथ–सिध्दों की परंपरा में आनेवाले संत कवि निपट बाबा जो औरंगजेब के समकालीन है। निपट बाबा ने जाति–पाति से ऊपर उठकर मानवीयता को महत्वपूर्ण माना है। निपटबाबा नाथ– योगियों के परंपरा में आने के कारण उनकी भाषा में दक्षिण प्रचलित भाषाओं के विविध रूप मिलते है, विशेष रूप से उनकी भाषा पर औरंगाबाद की भाषा का प्रभाव है। निपट बाबाने अपने काल की भाषा का और अपने आसपास के जन प्रचलित शब्दों का उपयोग किया है। उन्होंने ब्रज भाषा और खड़ीबोली में कविता दोहे और साखी लिखे है। उनकी भाषा हिंदी – उर्दू दोनों के बीच की कड़ी है।

निपटबाबा की उपलब्ध रचनाओं में निपट निरंजन और औरंगजेब का संवाद– इसमें कुल 114 कवित्त, निरंजन बंदीर के संवाद– इसमें 21 दोहे, नसीहतनामा में 22 छंद, फकीर चेतीसी में 40 दोहे, अतीतनामा में 30 दोहे, उपदेशात्मक अध्यात्मिक साखी में 138 कवित्त, 50 दोहे, 19 साखे और 15 भजन है। कहने का तात्पर्य यह है कि निपट बाबा का जितना भी साहित्य हिंदी में प्राप्त हुआ है उसमें भक्ति की सुचिता, नाम, क्रोध, लोभ,मोह, पाखंड का विरोध, दीन–दलित, शोषित और दुर्बलों की सेवा करना, आत्मा की शुचिता, सत्यनिष्ठा, वैराग्यवृत्ति आदि विषयों को लेकर रचनाएँ की। निपटबाबा हिंदी साहित्य उनके इस योगदान को नहीं भूल पायेगा।

संतकवि सावंत जी उन्नीसवी शिताब्दी के संतकवि थे। संतकवि सावंत निर्गुण भक्त थे। उन्होंने अपने पदों के माध्यम से कृष्णभक्ति को स्पष्ट किया है। उनकी संगुण भक्ति में निर्गुणता दिखाई देती है। संतकवि सावंत के कुछ फुटकर और कुछ अध्यात्मिक हिंदी पद मिलते है। उनके पदों में नामस्मरण की महत्ता, गुरु की महत्ता, ब्रह्मज्ञान का विवेक, मन

[illegible] मुनिवर की कर्मभूमि मराठवाड़ा रहा है। कहा जाता है कि जब श्री मुनिवर तीर्थाटन करते हुए औरंगाबाद पहुँचे तो निपट बाबा से उनकी भेट हुयी। श्री मुनिवर के पद मधु की तरह मीठे है। उनकी भाषा में अंगरखावाली गोष्ट, बात राजायी कल्ह, मन लोभाती गोष्ट, कुछ रफुट मराठी अंगरा तथा संस्कृत एवं हिंदी में भी रचनाएं की है। औरंगाबाद में रहने के कारण इनकी रचनाओं में उर्दू– फारसी के शब्द अनायास आते है। श्री मुनिवर पर सूफी – संतों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। मानमुनिवर की अपने पदों में चरम जीवन की सार्थकता ईश्वर की प्राप्ति है ऐसा स्पष्ट कहा है। उन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्र में दिखावेपन, बाह्याडंबर का विरोध कर आत्म–शुद्धी पर विशेष बल दिया। नामस्मरण की महत्ता, मनुष्य जो संसार में रहकर उससे निर्लिप्त रहने का उपदेश, ब्रह्मविद्याओं पर जोर, ईश्वर भक्ति, मनुष्य–जीवन की सार्थकता का सुंदर चित्रण किया है। इनके हिंदी पदों की कुल संख्या सत्ताईस है । इन की भाषा में दक्खिनीपन होते हुए भी कलिष्ट है, जो कतिपय रूपकों, उपमाओं और उदाहरणों से स्पष्ट होता है।

अमृतराय फक्त मुनीश्वर के शिष्य कहे जाते है। इनकी भी कर्मभूमि औरंगाबाद रही है। उनकी जीवन भर कविता के द्वारा जनता में भक्ति का प्रचार–प्रसार किया। इनके पदों को सुनकर लोग इस माधुर्य में डूब जाते थे। हिंदी में इनके मुख्य कवित्त, सुखानवित्त, द्रौपदी वस्त्र–हरण, जीव दशा, रामाष्टक वर्णन, रामकथा, कंस वर्णन, कृष्ण वर्णन, वर्णात्मक रचनाएं प्रसिद्ध है। उन्होंने मराठी और हिंदी में पहली बार कथाओं को लोक गीत के रूप में जन्म दिया है। कहना यह प्रचार की काव्य रचना होती है, जिसमें गुरु का अपेक्षा पद– प्रवाह गायनुसार व्यक्त होता है। उन्होंने मनुष्य जीवन की नश्वरता को स्पष्ट करते हुए ईश्वर की शाश्वत भक्ति का महत्व स्पष्ट किया है। हिंदू – मुसलमानों की अपनी भक्ति भावना समझाने हेतु उन्होंने मराठी मिश्रित हिंदी पद लिखे है।

तात्पर्य वर्तमान युग में सत्ता, पद, प्रतिष्ठा, प्राप्त करने के लिए एक अंधी दौड़ शुरू हुयी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक पल यह मारामार मची हुई जाती है जब [illegible] लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कोई भी व्यक्ति किसी भी हद तक पहुँचने को तैयार है। उपर्युक्त [illegible] के परिवेश में आम आदमी इतना त्रस्त है कि उसे इस विश्व में कोई भी वस्तु विश्वास योग्य नहीं लगती। इसे दौड़ की दुखान्त अंत कहा है। जो कुछ भी परिवर्तन आज मनुष्य की कार्यशैली में दिखाई दे रहा है उस मानसिकता में परिवर्तन लाने का कार्य कबीरदास से मराठी संतों ने किया है। संवेदना के स्तर पर जीनेवाले संत कवि निपटबाबा अपनी प्रखर वाणी के द्वारा समाज की वास्तविकता को तत्कालीन समाज में देखा था वह वास्तविकता आज भी समाज में है। उन्होंने अपने अनुभव अपने काल के माध्यम से व्यक्त कर मनुष्य को असंतुष्ट होने के लिए कहा है।

मराठी संतों ने अपनी अभिव्यक्ति मराठी भाषा के साथ– साथ हिंदी में भी व्यक्त की है। वह अनुभूति सहज, स्वाभाविक तथा प्रभावपूर्ण है ऐसा मैं मानती हूँ। इन संत कवियों ने अपने हिंदी साहित्य में सामाजिक बोध दिया है जो निश्चित ही सामयिक है। मैं ऐसा मानती हूँ की मराठी संतों का जो हिंदी साहित्य है उसे सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी इन की भाषा को समझ सकता है तथा इनके साथ कुछ क्षण का अनुभव कर सकता है। निश्चित ही मराठी संतों की हिंदी काव्य भक्तिकाल युग संतों की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ

1. संत साहित्य की स्वरूपरेखा – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
2. मराठी संतांची हिंदी कविता – डा.वी. राजवाडे
3. संत संकीर्तन – डॉ. हेमंत इनामदार
4. भक्तिकालीन काव्य में चरमोत्कर्ष मूल्य – डॉ.रामलाल पालीवाल
5. भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य – शिवकुमार मिश्र
6. संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता – डॉ. कीर्तिकुमार सिंह
7. भक्ति काव्य और मानव मूल्य वीरेंद्र मोहन
8. संत साहित्य के प्रतिमानों – डॉ. रामचंद्र तिवारी
9. भक्ति आंदोलन और साहित्य – डॉ. एन.सी.